ISSN-2231-2161

कथा क्रम

कथासाहित्य, कला एवं संस्कृति की त्रैमासिकी

(केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा से सहयोग प्राप्त)

वर्ष : 23 संयुक्तांक : 87-88

जनवरी-जून 2021

[illegible]

[illegible] ठाकुर : आमीन
[illegible] माथुर : एक यात्रा समानान्तर
[illegible] भारती : यह क्लाइमेक्स नहीं
[illegible] शर्मा : मुख्तसर सी बात है
[illegible] महदी : फ़ाजिल
[illegible] ओझा : बांस का पुल
[illegible] खान : भूत-समय
[illegible] त्रिपाठी : माफ़ करना कालिन्दी!
[illegible] गुप्ता : कस्तूरी

[illegible]धाएं

[illegible] सिंह दीप : उस देश में क्रांति
[illegible] कुमार सेठ : मौन

[illegible] नेपथ्य

[illegible] : मृणाल पांडेय की कहानियां : सामाजिक संरचना में स्त्री की नियति का सवाल

[illegible] आख्यान

[illegible] राव : एक निरपराध अपराध कथा लेखक

[illegible]

[illegible] गुप्ता : भूख और मौत की रिपोर्ट
[illegible] भारती : गणेश शंकर विद्यार्थी
[illegible] डॉ. नीरज वर्मा : भूमंडलीय संस्कृति : विश्वग्राम या संस्कृति का डिब्बा बंद
[illegible] डॉ. गौरी त्रिपाठी : स्त्री विमर्श का भारतीय नज़रिया

[illegible]ताएं

[illegible] नीलोत्पल रमेश : प्रेम, फिर भी कोई पास है, लौटना, प्रकृति
[illegible] आशीष वर्मा : सत्ता का सबसे क्रूरतम मजाक, जिंदगी के गर्म रास्तों पर, मेरी देह में
[illegible] प्रदीप बहराइची : पेड़ों के तनों में खून नहीं बहता,
[illegible] श्रीकांत : प्रश्न

राग लंतरानी

119 मूलचंद गौतम : नख दंत विहीन सरकारी और असरकारी व्यंग्य

कथा योद्धा

121 शशिकला राय : हारा वही जो लड़ा नहीं

सिनेमा

124 आशीष कुमार : 'मन का सूरज साथ है फिर क्यूं मुट्ठी भर उजियारा ढूंढे!'

कथा-शोध

127 कन्हैया लाल : समकालीन हिंदी उपन्यास और उपभोक्तावाद

समीक्षाएं

131 रजनी गुप्त : स्मृति आख्यान के आइने से (संस्मरण : ममता कालिया, चित्रा मुद्गल)
133 डॉ. संजय नवले : लोकस्वर का अनूठा सुर : सुर बंजारन (उपन्यास : भगवानदास मोरवाल)
135 प्रियंका कुमारी : 'धूप में नंगे पांव' में स्मृति की सर्जना (आत्म कथात्मक संस्मरण : स्वयं प्रकाश)
138 बलवंत कौर : अशरीरी अस्पृश्यता के विरोध में (कहानी संग्रह : श्यौराज सिंह 'बेचैन')
140 विमल किशोर : उम्मीद की नई रोशनी जगाती कहानियां (कहानी संग्रह : अरविन्द कुमार, शैलेन्द्र शांत)
143 उषा यादव : 'लॉकडाउन डेज़' :आत्ममंथन का अमृत-घट (उपन्यास : कामना सिंह)
144 अनीता मिश्रा : प्रेम से उपजे साहस का शिखर (उपन्यास : अमरीक सिंह दीप)

प्रसंग वंश

146 राजेन्द्र सिंह गहलौत : लोक जगत के अल्प शिक्षित वर्ग की पठकीय अभिरूचि और साहित्य

रपट

151 प्रताप दीक्षित : कथाक्रम 2020 : सकारात्मक परंपरा के नैरंतर्यता
02 सम्मति :
04 सम्पादकीय : इस दौर में लेखकीय दायित्व
आवरण : बंसीलाल परमार
रेखाचित्र : रोहित पथिक

संपादक

शैलेन्द्र सागर

संपादन सहयोग

रजनी गुप्त

सहयोग

मीनू अवस्थी

प्रबन्ध सहायक

राम मूरत यादव

संपादन संचालन : अवैतनिक

संपादकीय सम्पर्क :

डी-107, महानगर विस्तार, लखनऊ-226006

दूरभाष : 09415243310
e-mail : kathakrama@gmail.com
e-mail : kathakrama@rediffmail.com

इस अंक का मूल्य : 40 ₹

सदस्यता शुल्क : व्यक्तिगत त्रैवार्षिक-450 ₹, आजीवन 3000 ₹

संस्थाएं : वार्षिक-200 ₹, त्रैवार्षिक-550 ₹, आजीवन 3500 ₹

(सारे भुगतान मनीआर्डर/बैंक ड्राफ्ट द्वारा कथाक्रम के नाम से किये जायें)

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचारों से संपादक की सहमति आवश्यक नहीं है।

मुद्रक : प्रकाश पैकेजर्स, 257- गोलागंज, लखनऊ। फोन : 0522-2200425

लेख

स्त्री विमर्श का भारतीय नज़रिया

❑ डॉ. गौरी त्रिपाठी

काशी हिंदू विश्व विद्यालय से अध्ययन। विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में लेख प्रकाशित। एक पुस्तक कला का नेपथ्य प्रकाशित।
सम्प्रति-लगभग 10 वर्षों से अध्यापन।
सम्पर्क-गुरु घासीदास विवि, बिलासपुर छत्तीसगढ़ में हिंदी विभाग में एसोशिएट प्रोफेसर।
मो. 9452206059
ई-मेल : tripathigauri07@gmail.com

आईना क्यों न दूं कि तमाशा कहूं जिसे
ऐसा कहां से लाऊं कि तुझ-सा कहूं जिसे।

भारतीय स्त्रियों का जीवन ही जैसे एक हिचक के साथ शुरू होता है, जीवन भर एक अंतर्द्वंद्व चलता रहता है। लेकिन दूसरी तरफ इसका महिमामंडन भी कम नहीं है जैसे वह कोई देवी हो। जीवन और समाज का यह अंतर्द्वंद्व साहित्य में भी बहुत साफ साफ दिखाई पड़ता है। दुनिया की लगभग सभी सभ्यताओं में थोड़े बहुत फेरबदल के साथ वह एक जैसी नजर आती है। हमारा समाज उन्हें अपने-अपने चश्मे से देखता रहता है।

स्त्री का सवाल हमें पूरी दुनिया में मिलेगा। समाज की वे कौन सी संस्थाएं हैं जो स्त्री के जीवन को निर्धारित करती हैं। सिमोन द बोउवार के अनुसार साहित्य, संस्कृति, इतिहास व परंपराएं पुरुषों ने बनाए हैं, और पुरुषों ने अपने बनाए इस विधान में स्त्रियों को सर्वत्र दोयम दर्जा दिया है। भारतीय व पश्चिमी स्त्री सिद्धांतों को समझने के लिए बहुत हद तक यह पंक्तियां मददगार होती हैं। लेकिन सिर्फ इन्हीं दो चार बातों को पकड़ कर के हम स्त्री स्वर को बहुत बेहतर तरीके से नहीं विश्लेषण कर पाएंगे क्योंकि भारतीय और पश्चिमी परिवेश एकदम अलग अलग है। हमारी संस्कृति में ज्यादातर स्वाभाविकता का दमन कर दिया जाता है। भारतीय समाज स्त्रियों को ठीक वैसे ही नहीं देख पाता है जैसे पश्चिमी सभ्यता के देश देखते हैं। अंदरूनी तौर पर भले ही दोनों ही स्त्रियां एक जगह आकर ठहरती हैं लेकिन व्यावहारिक स्तर पर विचारधाराएं अलग-अलग होती हैं। तो जरूरी है कि हम तमाम पश्चिमी विचार को को साथ लेकर के भी भारतीय स्त्रियों की स्थिति को भारतीय व्यावहारिक पक्ष में देखने की कोशिश करें।

यह तो तय है कि स्त्रियां कितने विरोधी तत्वों के साथ सामंजस्य बैठा कर चलती हैं। ऋग्वेद की ऋचाओं में उसे हम कहीं सबसे महान पाते हैं और थोड़ी देर बाद उसे हम सबसे कमजोर पाते हैं। कहीं वह पूज्य श्रेष्ठ होती है तो कहीं काम की मूर्ति होती है। मध्यकाल का काव्य तो स्त्री विषयक अंतर विरोधी विचारधाराओं से भरा पड़ा हुआ है। वहां मनुष्य की भी बात है तो नारी को कुल नासी और कुल बोरन भी कह दिया जाता है-

चली है कुल बोरनी गंगा नहाए

तय कर पाना मुश्किल होता है कि वह वास्तव में है क्या? एक तरफ तो वह दैवीय है और दूसरी तरफ पुरुष के मार्ग में बाधा डालने वाली माया। उसे पुरुष के रास्ते में कुछ भी अच्छा ना कर पाने का कारण माना जाता है। तो ऐसे में स्त्री विमर्श की बातें कहां से और कैसे की जाए। हम तो स्त्री को मनुष्य तक का दर्जा नहीं देते, उसे हम स्वाभाविक मानते ही कहां हैं? जाहिर सी बात है ऐसे समय में हम स्त्री विमर्श को या स्त्री जीवन को समझने के लिए पश्चिमी सिद्धांतों की पड़ताल करते हैं। हालांकि हम कोई भी सिद्धांत हर जगह नहीं प्रयोग कर सकते हैं। इसके लिए पश्चिमी विचारधारा से अलग सैद्धांतिकी की आवश्यकता है क्योंकि पश्चिम में इतनी विरोधी स्थितियां नहीं दिखाई पड़ती हैं। वहां स्त्रियों की दशा पहले से ही काफी साफ है। वह शुरू से ही पुरुषों से कमतर है इसलिए उन्हें शक्ति स्वरूपा नहीं समझा जाता, वे देवी नहीं हैं। बल्कि धार्मिक स्त्रियां जो चर्च से जुड़ी हुई थी, उन स्त्रियों ने स्वयं स्त्रियों में ममत्व का भाव खोज कर मातृत्व के भाव को सर्वोच्च स्थापित करने का प्रयास किया।